महासंतों एवं विचारकों का विशेष आवाहन

अखिल भारतीय
भगवद्गीता महासम्मेलन

वर्तमान नाज़ुक समय के लिये
गीता के भगवान की श्रीमत्

3 से 7 सितम्बर 2022 | शान्तिवन, आबू रोड

आयोजक
धार्मिक प्रभाग - ब्रह्माकुमारीज़
मुख्यालय : आबू पर्वत

वर्तमान नाज़ुक समय के लिये गीता के भगवान की श्रीमत्

भारत जो कभी देव-भूमि कहलाता था जहाँ नारी देवी के रूप में सम्मानित थी, आज उसी भारत में प्रतिदिन हजारों बलात्कार हो रहे हैं। लाखों-करोड़ों नारियों के जीवन बरबाद हो चुके हैं। उन्हें कोई सहारा नज़र नहीं आता। अति पीड़ित, असहाय द्रौपदियाँ गीता के भगवान को पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि अब तो अति हो गई है - इस काम वृति का अंत करके भारत को पुन: पावन देव-भूमि बनाइये।

गीता में भगवानुवाच है 'काम एष क्रोध एष'। आज सारा देश क्रोध की अग्नि से जल रहा है। क्रोध हिंसा का बीज है। भगवान ने गीता में काम, क्रोध आदि विकारों को वैरी शत्रु जानकर 'मार डालने' की श्रीमत दी है। इन विकारों से मानसिक युद्ध को हिंसक युद्ध का रुप देने से गीता का वास्तविक 'अहिंसा परमो धर्म:' का संदेश लुप्तप्राय हो गया है।

वर्तमान नाज़ुक समय अथवा संकट की वेला में महासंतों और विचारकों का विशेष आवाहन करते हुए हम सभी विचारशील महानुभावों को सादर आमन्त्रित करते हैं कि आयोजित भगवद्गीता महासम्मेलन में पधारकर दैवी भारत के पुन: निर्माण के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनें।

आपकी शुभचिंतक
ईश्वरीय संदेश वाहक
ब्रह्माकुमारी बहनें

सम्मेलन के विचार बिन्दु

○ आज समाज में पतन के दो मूल कारण हैं - बढ़ती हुई काम वृति और हिंसक प्रवृति को रोकने के लिए गीता के भगवान की श्रीमत क्या है?

○ भगवान ने गीता में विकारों और विशेष रूप से 'काम' विकार को ही पतन का मूल कारण क्यों बताया है?

○ विकारों पर विजय के लिये गीता के भगवान द्वारा सिखाया गया भारत का मौलिक योग कौनसा था?

○ 'परमात्मने नमः' कहकर वन्दना केवल निराकार ज्योतिस्वरूप शिव की होती है। निराकार अजन्मा 'शिव' का भगवानुवाच करने के लिये साकार शरीर में अवतरण किस अलौकिक विधि से होता है?

○ गीता में भगवानुवाच है 'प्रजापिता ब्रह्मा ने कल्प के आदि में ज्ञानयज्ञ रचा जिससे देवताओं की उत्पत्ति हुई। देवताओं को क्या ब्रह्मा ने रचा या ब्रह्मा के द्वारा करनकरावनहार परमात्मा शिव ने?

○ भगवान द्वारा दैवी सम्पदा की पुनः स्थापना का मूलाधार था 'अहिंसा'। क्या हिंसक युद्ध द्वारा 'अहिंसा परमो धर्मः' की स्थापना हो सकती है?

○ महाभारी महाभारत युद्ध की सच्चाई क्या है? गीता के भगवान के अवतरण का नाजुक समय कौनसा है?

सुखधाम

शान्तिधाम

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।।

कार्यक्रम

स्थान - कान्फ्रेन्स हाल, शान्तिवन

शनिवार, 3 सितम्बर 2022
सांय 5.30 से 8.00 - उद्घाटन सत्र

रविवार, 4 सितम्बर 2022
प्रात: 10.30 से 1.00 - खुला सत्र -1
दोपहर 3.00 से 5.00 - विचार गोष्ठियाँ
सांय 6.00 से 8.30 - खुला सत्र -2

सोमवार, 5 सितम्बर 2022
प्रात: 10.30 से 1.00 - पैनल चर्चा -1
दोपहर 3.00 से 5.00 - विचार गोष्ठियाँ
सांय 6.00 से 8.30 - पैनल चर्चा -2

मंगलवार, 6 सितम्बर 2022
प्रात: 10.30 से 1.00 - समापन सत्र

बुधवार, 7 सितम्बर 2022 - एक नई सुबह के लिए प्रस्थान

ब्रह्माकुमारी संस्थान का परिचय

ब्रह्माकुमारीज् ने पिछले 86 वर्षो में अर्न्तराष्ट्रीय संस्था के रूप में उभर कर विश्व के 137 देशों में अपनी 4500 से अधिक शाखाएं स्थापित की हैं। विश्व भरके लाखों लोगों और उनके परिवारों ने इसकी आध्यात्मिक शिक्षा एवं राजयोग मेडिटेशन को जीवन में अपनाकर मन की शान्ति एवं विचारों की एकाग्रता से जीवन में विशेष परिवर्तन का अनुभव किया है। ब्रह्माकुमारीज् संयुक्त राष्ट्र की NGO एवं ECOSOC और UNICEF की परामर्शदायी अर्न्तराष्ट्रीय संस्था है। संस्था का उद्देश्य - मनुष्य में आध्यात्मिक जागरूकता एवं आत्मविश्वास के द्वारा शान्तमय और सुखमय विश्व का नव-निर्माण करना है।

अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें

मोबाइल-9414834827, 9650692204, 9650692053
ईमेल - santsammelan@bkivv.org

बी.के. मनोरमा बहन
(अध्यक्ष, धार्मिक प्रभाग)
9450404514

बी.के. बृजमोहन भाई
(संयोजक)
9650692053

बी.के. रामनाथ भाई
(मधुबन समन्वयक, धार्मिक प्रभाग)
9414150854